Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

साम्प्रतिक पात्र, चरित्र–चित्रण–विमर्श

बिन्दू साहू
वरिष्ठ शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित, विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 188-192
Publication Issue :
November-December-2021
Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

सारांश– आचार्य प्रभुदत्त शास्त्री ने भारतीय समाज एवं गणपति के जीवन से सम्बद्ध विविध घटनाओं को अत्यन्त मार्मिकता से संजोया है। कवि ने संस्कृति के स्वरूप को उसके वास्तविक रूप में रखने के लिए गणपति के जीवन चरित्र को माध्यम बनाया है। चरित्र चित्रण कला की उत्कृष्टता एवं अनुपमयेता इससे स्पष्ट हो जाती है कि पात्र अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं को संजोय हुए सहस्त्रों वर्षों के पश्चात भी चिर नूतन एवं सुन्दर है। गणपति सम्भवम् महाकाव्य का चरित्रांकन शास्त्रीय दृष्टिकोण से संवलित होते हुए भी राह बदल देने की भी क्षमता रखते है। इसके अतिरिक्त परवर्ती कृतियों अथवा विभिन्न भाषाओं के साहित्य में भी संस्कृत साहित्य के प्रमुख कारण है उन पत्रों अथवा चरित्र की सार्वभौमिकता तथा मानव समाज को अधिकाधिक रूप में प्रभावित कर देने की क्षमता है।

मुख्य शब्द– समाज, वास्तविकता, चरित्र–चित्रण, अभिनव, क्षमता, संस्कृत–साहित्य,पं0 प्रभुदत्त शास्त्री।

संस्कृत साहित्य की इतनी अधिक लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह है कि इसमें वर्णित पात्र तथा उनका चरित्र सामान्य जन के मानस पर अपनी छाप छोड़े हुए है। यही नहीं संस्कृत साहित्य के अनेक पात्रों (यथा–रामायण,महाभारत आदि के पात्र) से सामान्य जन आज भी प्रेरण ग्रहण करते है। तथा उनके चरित्र से प्रभावित होते हैं, तथा अपने जीवन की समस्यों का समाधान उन पात्रों के जीवन संघर्ष में पाते है, जिससे उनका व्यवहार एवं जीवन संचालित होते है। संस्कृत साहित्य के पात्र अथवा उनका चरित्र आज भी प्रायः मानव समाज में जीता जागता दिखाई पड़ता है।

यथार्थपरक दृष्टिकोण के अनुसार साहित्य में चित्रित पात्र एवं उनके चरित्र का समाज से साक्षात सम्बन्ध होना चाहिए अथवा समाज के जीवन्त पात्रों को ही रचनाओं का आधार बनाया जाना चाहिए। पात्र चाहे काल्पनिक क्यों न हो उनका सम्बन्ध समाज से अवश्य होना चाहिए अतः ''यथार्थवाद के विषय में किसी निश्चित एवं सर्वमान्य परिभाषा की आशा नही करनी चाहिए।''[1] इस दृष्टिकोण से समाज के पात्रों अथवा चरित्रों का साक्षात सम्बन्ध समाज से हो रहा है। अथवा तो आज ही समाज से जीते जागते दिखाई पड़ते हैं।

संस्कृत साहित्य के प्रमुख पात्र एवं उनके चरित्र का विश्लेषण करने से पूर्व लक्षण ग्रन्थों में पात्र योजना के विषय में क्या कहा गया हैं ? इस पर यत्किञ्चित प्रकाश डालना आवश्यक हैं। सर्वप्रथम

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महाकाव्य की पात्र योजना पर विचार किया जाये तो ज्ञात होता है कि आर्चायों ने महाकाव्य के नायक के रूप में किसी देवता अथवा धीरोदात्त और गुणी, क्षत्रिय एवं उच्च कुल में उत्पन्न हो।

साहित्यदर्पणकार ने आगे नायक के लक्षण प्रस्तुत किये हैं –

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रेको नायक सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियों वापि धीरोदात्त गुणान्वितः।। 315।।[2]
एकवंश भवा भूपाः कुलजा वहवोऽपि वा ।। 316।।[3]
श्रृंगारवीरशान्तानामे कोऽगप्री रस इष्यते।
अप्रानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसंधयः।।317।।[4]
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तवेष्वेकं च फलं भवेत्।।318।।[5]

जहाँ तक चरित्र का प्रश्न है तो उन्होंने ' **सतां च गुणकीर्तनम्**' के अलावा '**क्वचिन्निन्दा खलादीनाम्**' कहकर मानव की दुष्प्रवृतियों को भी उजागर करने की बात कही हैं।

नाटकों की पात्र योजना के सम्बन्ध संस्कृत नाट्यशात्र के आचार्यों ने इस विषय में विस्तृत रूप से विचार किया है। आचार्यों ने नाट्य के पात्रों का नायक, नायिका, प्रतिनायक, पीठमर्द आदि वर्गों में विभाजित किया हैं। चरित्र के आधार पर नायक के चार भेद किये गये हैं–**1. धीरोदात्त 2. धीरललित 3. धीरप्रशांत 4. धीरोद्धत** नाटक में जहाँ तक चरित्र चित्रण की बात हैं आचार्यों ने काफी कुछ लक्षणों में प्रस्तुत कर दिया है। तदनुसार चरित्र चित्रण संवादो द्वारा स्वगत कथन द्वारा अथवा पात्रों की बोल–चाल, बेष भूषा और विविध चेष्टाओं का उल्लेख किया हैं जो चरित्र–चित्रण में काफी अहम भूमिका रखते हैं।

''**रामायण, महाभारत**'' का नाम याद आते ही कुछ सवाल सहज रूप से उठने लगते हैं। इनके पात्र भारतीय जनता के बीच इतने लोकप्रिय क्यों हो रहे हैं ? ये मानवीय चेतना के किस गहरे यथार्थ से सम्बद्ध है जो किसी ना किसी रूप में हमें उत्सुकता प्रेरणा और बल देते रहते हैं। वाल्मीकि पात्रों के चरित्र विकास में उनकी वैयक्तिकता को पर्याप्त महत्त्व देते हैं यथार्थवादी दृष्टि के अनुसार पात्रों का चरित्र उन पर थोपा नही जाता अपितु उनका स्वतंत्र विकास घटनाओं और परिस्थतियों के बीच होता हैं–यही रामायण में भी देखने को मिलता है। यही कारण है कि रामायण के पात्र जीवन्त हैं – **''वाल्मीकि ने वस्तुपरक दृष्टि के बल पर पात्रों के चरित्र की विशिष्ठता सम्पन्न यथार्थ और जटिल सृष्टि की हैं जिसमें शास्वत जीवन्तता है''।[8]**

इस प्रकार पात्र योजना एवं चरित्र–चित्रण में वाल्मीकि की दृष्टि कोरे आदर्श से प्रेरित नही हैं, अपितु उसका धरातल यथार्थ हैं। यही कारण हैं कि 'वाल्मीकि के चरित्र अलग नहीं, बल्कि ऐसे मानव प्राणी हैं जो जीवन के शान्त एवं आवेकपूर्ण प्रवाहों के प्रति संवेदनपूर्ण प्रतिक्रिया करते हैं।'[9]

समाज के कटु यथार्थ के द्वारा धर्माचरण का संन्देश देना ही महाभारत का प्रमुख उद्देश्य हैं तदनुसार ही महाभारत में समाज के भिन्न–भिन्न वर्गो से आए पात्रों में पूरी विविधता हैं, कतिपय विद्वान महाभारत को ऐतिहासिक वीर काव्य की कोटि में रखते हुए पात्रों की प्रमुखतया वीर योद्धा के रूप में देखते हैं।[10]

कृष्ण अर्जुन के सारथि एवं पथप्रदर्शन के रूप में ही नहीं बल्कि एक महान उपदेशक के रूप में सामने आते हैं। और केवल एक महान उपदेशक ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज धारा को मोड़ देने की अद्भुत क्षमता हैं। इसलिए वे महाभारत के जननायक की तरह उभरते हैं।

'रघुवंशम्' में महाकवि कालिदास ने भारतीय समाज एवं संस्कृति के स्वरूप को उसके वास्तविक रूप में रखने के लिए रघवंशियों के जीवन चरित्र को माध्यम बनाया हैं उन्होंने रघुवंशी राजाओं का ऐतिहासिक चरित्र प्रस्तुत किया है।[11] कालिदास ने जीवन के विविध परिस्थितियों तथा घटनाओं की प्रस्तुति के लिए दिलीप, रघु, अज, राम आदि अनेक राजाओं का चित्रण किया हैं रघुवंश महाकाव्य में इस वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर आचार्य विश्वनाथ ने अपने महाकाव्य के लक्षण में अद्भुत ढंग से प्रस्तुत किया हैं।

कालिदास ने रघु आदि जैसे उदात्त चरित्र के साथ ही अग्निवर्ण जैसे कुत्सित चरित्र को भी प्रस्तुत किया हैं। अतः कालिदास का उद्देश्य मात्र आदर्श चरित्र की प्रस्तुति नहीं, चरित्र की यथार्थता हैं यही कारण है की ''कालिदास के पात्र जीवनी शक्ति से सम्पन्न जीते जागते प्राणी हैं।''[12] यथार्थ दृष्टि के अनुरूप कालिदास ने चरित्रगत विसंगतियों को भी स्पष्टता के साथ उभारा हैं।

प्रभुदत्त शास्त्री के कालजयी लेखनी को स्पर्श पाकर वे सभी पात्र जीवन्त हो उठे है। आप ने पात्रों का एकाङ्गी चित्रण न करके सर्वगत चित्रण किया है। गणपति इस महाकव्य के नायक है जो कि दिव्यपात्र हैं और वीरोदात्त गुणों से मण्डित हैं। गणपति सम्भवम् महाकाव्य के अनुसार ये सात रूपों में आते हैं।

साहित्य में पात्र का अनन्य साधारण महत्व हैं साहित्य के बिना पात्र और पात्र के बिना साहित्य की सृष्टि हो ही नही सकती। साहित्य का केन्द्र बिन्दु मानव हैं। अतः साहित्य के पात्र के रूप में मानव का ही चित्र अंकित किया जाता है। भारतीय साहित्य के आधार पर ही डा0 रमाशंकर त्रिपाठी ने साहित्य में पात्र का स्थान और महत्व को विशद् प्रस्तुत करते हुए उचित लिखा है– '' भास के उदयन और वासदत्ता, कालिदास के दुष्यन्त और शकुन्तला, भवभूति के राम और सीता, प्रसाद के स्कन्द और देवसेना प्रेमचन्द्र की हीरो और धनिया की सृष्टि नही हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि साहित्य में पात्रों का स्थान निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं।

पाश्चात्य विचारधारा ने भारतीय आचार्यों की भांति पाश्चात्य आचार्यों ने भी नाटक के पात्र और चरित्र सृष्टि पर गम्भीरता से विचार किया हैं जिस प्रकार भारतीय विचार धारा के अनुसार ''पात्र'' और ''चरित्र'' शब्द एक विशिष्ट अर्थ रखते हैं उसी प्रकार पश्चिमी विचार धारा में नाटकीय पात्रों के अर्थ में ग्रीक और लेटिन भाषाओं ने ''परसों''[13] ने शब्द का प्रयोग किया हैं।

अरस्तु के अनुसार चरित्र चित्रण के लिए नाटककार को छः बातों की और ध्यान देनें की जरूरत है। 1. भद्रता 2. औचित्य 3. जीवनानुकलता 4. एकरूपता 5. सम्भाव्यता 6. श्रेष्ठ चित्रकारों का आदर्श।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि नाटक और महाकाव्य के प्राणतत्वों में **चरित्र और मनोविज्ञान** नाटककार जिन पात्रों की सृष्टि अपने नाटक में करता है उसमें उनका द्वन्द्व विशेष महत्वपूर्ण होता हैं। बिना द्वन्द्व के चरित्र सृष्टि नीरस और निष्प्रभ होगी

नाटक में चरित्र–चित्रण का महत्व निःसन्देह है। सामान्यतया स्पष्ट है कि बिना चरित्र और चरित्र–चित्रण के आभाव में नाटक की संरचना नहीं हो सकती। नाटक में चरित्र का इसलिए महत्व है कि वह मानव की ''प्रत्यक्ष भावात्मक प्रवृत्तियों की व्यवस्था हैं।''[14]

व्यक्तित्व के बारे में जैनेन्द्र कुमार का कथन है कि ''वस्तुतः व्यक्तित्व पात्र के भीतर की उस अंतरंग मानस शक्ति को कहते हैं जिसमें वह प्रेक्षकों की रूचि और कल्पना को बाँध लेता है और ऐसे हर पात्र के प्रति दर्शकों के मन में देखने की एक चाह और उत्सुकता बनी रहती है।''[15]

मनोविज्ञान के परिपेक्ष्य में जब हम नाटक का अध्यन करते है तब हमें यह भी दिखाई देता है कि आज का नाटककार अपनी चरित्र–सृष्टि में मानव के खण्डित व्यक्तित्व को व्यक्त करता है। आधुनिक जीवन में आज का व्यक्ति इतना त्रस्त है,ध्वस्त है, व्याकुल है, आकुल हैं कि वह कहीं न कहीं टूट जाता है। यह चरित्र चित्रण की उत्कृष्ट प्रणाली है। आज के टूटे हुए मानव के बारे में आधुनिक युग के संदर्भ में **डा0 विपिन कुमार अग्रवाल** के विचार उचित हैं।

'' आज के मानव का माथा एक ओर लटका हुआ है और उसके पैरों की गति गायब है। इतना ही क्यों वह भूखा है, असन्तुष्ट है, भ्रमित है, आत्मनिर्वासित है, विघटित है और अपने आप से बेखबर है। घरवाला भी होकर बेघर है व्यक्तित्ववान होकर भी अव्यवस्थित है और सबकुछ का स्थायी होकर भी जीवन तत्वों से दूर हैं तो उसके स्नायुतंत्र में तनाव पैदा हुआ, उसकी विचारशक्ति प्रबल हो उठी और तो और उसने कहीं भीतर ही तथा कसमसाने लगा।''[16]

पात्र एवं चरित्र–दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है कि क्योंकि बिना पात्रों के नाटक एवं महाकाव्य का रचनाविधान असम्भव है भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा को ध्यान में पात्रों की सृष्टि और प्रणाली पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया हैं।

निष्कर्षतः महाकाव्य एवं नाटक की पात्र योजना से सम्बद्ध काव्यशास्त्री विचारों का यथार्थवादी दृष्टिकोण से मूल्यांकन करने पर ज्ञात होता है कि आचार्यों ने इतिहासोद्भूत या सज्जनाश्रित वृत्त के द्वारा महान उद्देश्य वाले महाकव्य के नेता को ऐतिहासिक अथवा सज्जन पुरूष होना कहा गया है। संस्कृत साहित्य के अनेक ऐसे पात्र हैं जो सदियों से विशाल भारतीय जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़े हुए है क्योंकि जनसामान्य अपनी समस्याओं का समाधान उन पात्रों के जीवन संघर्ष में प्राप्त करता हैं।

गणेश कथा के इतने बड़े वाङ्मय में विलसित पात्रों को गणपति सम्भवम् महाकाव्य के कलेवर में समेटना, निःसन्देह चातुर्यपूर्ण हैं। प्रस्तुत काव्य के समस्त पात्र दिव्यलोक से सम्बन्धित हैं, वस्तुतः महाकाव्य की समस्त घटनाएं ही दिव्यलोक के प्रांगण में घटती है।

सन्दर्भ–सूची

1. आदर्श एवं यथार्थ,पृ0,72
2. साहित्य दर्पण, 6–315
3. साहित्य दर्पण, 6–316
4. साहित्य दर्पण, 6–317
5. साहित्य दर्पण, 6–318
6. साहित्य दर्पण, 6–319
7. दशरूपक, द्वितीय प्रकाश, का0,3
8. वस्तुवादी परिप्रेक्ष्य और प्राचीन साहित्य पृ0,59
9. वाल्मीकि और कालिदास की काव्यकला पृ0,220
10. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास, पृ0,193
11. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ0,102
12. वाल्मीकि और कालिदास की काव्यकला, पृ0,66
13. आधुनिक हिन्दी नाटक, चरित्र–सृष्टि के आयाम डा0 लक्ष्मीरॉय,पृ0,30

14. वनजसपदम वि चेलबीवसवहलय उब कवनहंसएच्ए526एम्क1948
15. साहित्य का श्रेय और प्रेय–जैनेन्द्र कुमार, पृ0,164 संस्क0 1961
16. आधुनिक हिन्दी नाटकः चरित्र सृष्टि के आयम – डा0 लक्ष्मीरॉय, पृ0,50संस्क01979